महिलाओं के लिए प्रेरणा का प्रतीक बनी परमेश्वरी देवी

पशुपालक का नाम	:	श्रीमती परमेश्वरी देवी
पिता का नाम	:	स्व. नेतराम जी
उम्र	:	34 वर्ष
पता	:	वार्ड नं. 15, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)
शिक्षा	:	5वीं पास
मोबाईल नं.	:	9950790535

परमेश्वरी देवी ने घरेलू महिला होने के साथ–साथ एवं ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं होने के कारण डेयरी उद्योग शुरू करने का लक्ष्य रखा। इसी दौरान परमेश्वरी देवी स्थानीय महिला होने के कारण पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ से सम्पर्क किया और डेयरी व्यवसाय प्रारम्भ करने की बात वैज्ञानिकों के सामने रखी। इन्होंने पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ से प्रशिक्षण प्राप्त कर वर्ष 2018 में 3 गायों से व्यवसाय प्रारम्भ किया। इस दौरान यह निरन्तर पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों से सम्पर्क में रहकर पशुओं का वैज्ञानिक तरीकों से प्रबन्धन किया। परमेश्वरी देवी अपने सभी पशुओं को समय–समय पर कृमिमनाशक दवाई तथा टीकाकरण करवाती रहती है। जिससे इनके पशुओं में रोग कम व उत्पादन अधिक होता है। यह अपने पशुओं को साइलेज हरे चारे का आचार खिलाती है जिससे पशुओं के स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव पड़ता है तथा उत्पादन भी अधिक होता है। अब इनके पास कुल 25 गायें है। जिनसे दूध उत्पादन कर स्थानीय बाजार में बेच कर प्रतिवर्ष 3.5–4 लाख के रूपये की आमदनी कर रही है। परमेश्वरी देवी बताती है कि इनके पति के देहांत होने के बाद इनके घर की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई तथा इन्होंने अपनी घर की स्थिति सुधारने के लिए खेती भी की, लेकिन यह व्यवसाय सफल नहीं होने के कारण इन्होंने डेयरी पालन व्यवसाय को ही निरंतर जारी रखा। ये अपने क्षेत्र में अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है तथा यह अपने इस व्यवसाय से अनेक बेरोजगारों को रोजगार भी प्राप्त करा रही है। परमेश्वरी देवी अपनी सफलता से बहुत खुश है तथा यह अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार तथा पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ को देती है।

खेती के साथ मछली पालन से आमदनी में आया उछाल

पशुपालक का नाम	:	श्री फकीर सिंह
पिता का नाम	:	श्री गुरदेव सिंह
उम्र	:	45 वर्ष
पता	:	पुरानी बारेंका, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)
शिक्षा	:	12वीं पास
मोबाईल नं.	:	8559955310

फकीर सिंह ज्यादा शिक्षित नहीं होने के कारण खेती का कार्य ही करते थे। इसी दौरान वर्ष 2016 में गांव पुरानी बारेंका में लगाए गये प्रशिक्षण में पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के सम्पर्क में आए व उस दौरान केन्द्र के वैज्ञानिकों से पशुपालन के वैज्ञानिक तरीकों को समझा तथा घर पर जो पशु रखे हुए थे उनको वैज्ञानिक तरीकों से रख–रखाव करना प्रारम्भ कर दिया। फकीर सिंह के पास कुल 20 बीघा जमीन थी। जिसमें उन्होंने पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिक सलाह के अनुसार 2018 में उन्होंने 2 बीघा भूमि में मछलियों के लिए तालाब का निर्माण किया व मछली पालन के व्यवसाय को अपना लिया। इसी दौरान फकीर सिंह की खेती के साथ–साथ लगभग 1.5 लाख रुपये वार्षिक आमदनी में बढ़ोतरी हुई और उनकी आर्थिक स्थिति और मजबूत हुई। फकीर सिंह पशुओं के वेस्टेज (गोबर) से मछलियों का भोजन हो जाता है व शेष बचे गोबर से वर्मी कम्पोस्ट खाद तैयार कर लेते हैं। जिससे जैविक खेती में भी उनको सहायता मिलती है। फकीर सिंह खुद कम पढ़े–लिखे होने पर भी अपनी आजीविका को चलाते हुए अपने बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान करवाई एवं उन्हें सरकारी सेवा में प्रवेश दिला पाए। आज फकीर सिंह पूरे गांव के लिए प्रेरणादायी स्त्रोत हैं व समय–समय पर पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ पर आकर मछली पालन एवं पशुपालन की जानकारी लेते रहते हैं। फकीर सिंह का मानना है अच्छे प्रशिक्षण से पशुपालन के अच्छे नये आयाम स्थापित हो सकते हैं। फकीर सिंह नई तकनीकों को लेकर आस–पास के गांवों के किसानों को पशु विज्ञान केन्द्र पर प्रशिक्षण लेने के लिए प्रेरित करते हैं।

राधेश्याम ने मुर्गी व बकरी पालन से बदली अपनी आर्थिक स्थिति

पशुपालक का नाम	:	श्री राधेश्याम माली
पिता का नाम	:	श्री सत्यनारायण माली
उम्र	:	34 वर्ष
पता	:	11 पी पतरोड़ा, अनूपगढ़ (श्रीगंगानगर)
शिक्षा	:	10वीं पास
मोबाईल नं.	:	7427012334

अनूपगढ़ के युवा राधेश्याम पुत्र श्री सत्यनारायण माली की आर्थिक स्थिति बहुत ज्यादा कमजोर थी इसलिए उन्होंने 10वीं तक ही पढ़ाई की। खुद की जमीन नहीं होने के कारण रोजगार की तलाश में शहर जाने लगे और वहां मजदूरी करने लगे। इस दौरान राधेश्याम ने पशु विज्ञान केंद्र, सूरतगढ़ के प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया तो उन्हें 2017 में मुर्गी पालन व्यवसाय शुरू करने की प्रेरणा मिली। इस दौरान पशु विज्ञान केंद्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों को अपनी स्थिति बताई और मुर्गी पालन करने की इच्छा व्यक्त की। उनकी मेहनत से 2017 में जगह किराए पर लेकर एक छोटा सा 500 मुर्गियों का व्यवसाय शुरू किया। इस दौरान वह निरंतर पशु विज्ञान केंद्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों के संपर्क में रहते थे और जो भी मुर्गी पालन में समस्या आती थी वह उनका वैज्ञानिक तरीके से समाधान करते थे। धीरे–धीरे उन्होंने अपना मुर्गी पालन व्यवसाय को 2500–3000 तक बढ़ा लिया। राधेश्याम के पास मुर्गी की नस्ल कड़कनाथ, आरआइआर है। इस व्यवसाय में मुर्गियों से अंडा उत्पादन भी करते हैं जो नजदीक बाजार में बिक जाता है एवं मुर्गियों की खाद बेच कर वह मुर्गियों के फीड का खर्चा निकाल लेते हैं। इस प्रकार राधेश्याम प्रतिवर्ष 2.5 से 3 लाख की आय मुर्गी पालन से प्रतिवर्ष अर्जित कर लेते हैं। इसके साथ ही राधेश्याम ने वर्ष 2019 में बकरी पालन भी प्रारंभ कर दिया है। इन्होंने 10 बकरी तथा एक बकरे से अपने बकरी पालन व्यवसाय को प्रारंभ किया जिससे अब इनके पास 17 बकरियां हो गई हैं। बकरी पालन से भी यह अच्छी आय प्राप्त कर लेते हैं। युवा राधेश्याम की चाहत और मेहनत से घर की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो गई और मुर्गी पालन से गांव में रहकर भी अच्छी आय के साथ–साथ अन्य युवाओं को भी पशुपालन के प्रति जागरूक करते हैं। राधेश्याम अपने इस व्यवसाय से बहुत खुश है तथा वह अपनी इस सफलता का श्रेय अपने परिवार जनों तथा पशु विज्ञान केंद्र, सूरतगढ़ को देते हैं।

सूअर पालन में युवा गौतम ने बनाई अपनी पहचान

पशुपालक का नाम	:	श्री गौतम खण्ड
पिता का नाम	:	श्री धनराज खण्ड
उम्र	:	28 वर्ष
पता	:	9 एम.डी., अनूपगढ़, (श्रीगंगानगर)
शिक्षा	:	बीए द्वितीय वर्ष
मोबाईल नं.	:	94139-31707

अनूपगढ़ जिला श्रीगंगानगर के निवासी गौतम को कम उम्र में ही पशुपालन से लगाव था। अपनी शिक्षा पूर्ण करने के बाद घर की आर्थिक स्थिति ज्यादा ठीक नहीं होने पर उन्होंने सूअर पालन को अपनी आजीविका का साधन बनाने का सोचा। इस दौरान उन्होंने अपने पिता के मार्गदर्शन से पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ से सम्पर्क किया और ऑनलाइन प्रशिक्षण एवं केन्द्र पर आवासीय प्रशिक्षण में सूअर पालन विषय पर प्रशिक्षण लिया और सूअर पालन को अपना व्यवसाय बनाने का ठान लिया। केन्द्र द्वारा दिये मार्गदर्शन पर गौतम ने सर्वप्रथम शैड निर्माण किया व 5 मादा सूअर लाकर अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर दिया व 6 महीने पश्चात गौतम के पास लगभग सूअरों की संख्या 50 हो गई। इसके साथ में अपने घरेलू पशु गाय व भैंस पर भी ध्यान देते हैं जिससे रोजमर्रा के लिए दूध व घी उत्पादन हो जाता है। गौतम समय–समय पर अपने पशुओं को टीकाकरण और कृमिनाशक दवाइयां देते हैं। गौतम अपने साथ अपने उम्र के नवयुवकों को वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन की प्रेरणा देते है। गौतम बताते हैं कि अपनी शिक्षा के साथ–साथ प्रति वर्ष लगभग 2 से 3 लाख रूपये आय प्राप्त कर लेता हूं। अपने कार्य की सफलता का श्रेय पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ को देता हूँ जिसने मुझे प्रशिक्षण देकर पशुपालन में नये आयाम स्थापित करने में मेरी सहायता प्रदान की।

प्रताप सिंह ने बकरी पालन को बनाया आय का साधन

पशुपालक का नाम	:	श्री प्रताप सिंह शेखावत
पिता का नाम	:	श्री जय सिंह शेखावत
उम्र	:	50 वर्ष
पता	:	ठुकराना, सूरतगढ़, (श्रीगंगानगर)
शिक्षा	:	10वीं
मोबाईल नं.	:	9413931707

श्रीगंगानगर जिले के सूरतगढ़ तहसील के ठुकराना गांव के प्रताप सिंह शेखावत की शिक्षा दसवीं तक है। ये पारम्परिक खेती करते थे, इनके पास खेती योग्य 10 बीघा जमीन है जिसमें अधिक आय नहीं होने के कारण बकरी पालन को आय बढ़ाने के लिए अपनाया। इन्होंने शुरूआत में 5 बकरी और व उनके 15 बच्चे लेकर आए तथा बकरी पालन शुरू किया। कुछ समय पश्चात प्रताप सिंह पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के सम्पर्क में आए और यहां से प्रशिक्षण प्राप्त कर वैज्ञानिक विधि से बकरी पालन करने लगे। यह समय–समय पर पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के निरंतर सम्पर्क में रहकर अपनी समस्याओं को समाधान करते रहते हैं। इन्होंने प्रथम वर्ष में 1.5 लाख की आमदनी प्राप्त की तथा दूसरे और तीसरे वर्ष क्रमशः 2.5 और 3 लाख प्रतिवर्ष आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। अब इनके पास 50 सिरोही तथा 20 बरबरी नस्ल की बकरियां हैं। प्रताप सिंह अपने इस व्यवसाय से बहुत खुश हैं तथा वह अपनी इस सफलता का श्रेय अपने परिवारजनों एवं पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ को देते हैं इनके इस व्यवसाय से प्रेरित होकर अन्य गांव के किसानों ने भी पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ में प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया है। प्रताप सिंह जी ने रेगिस्तान में चारे के अभाव होने पर भी बकरियों को सूखा चारा, दाना, पत्तियां आदि खिलाकर अन्य किसानों को भी बकरी पालन के लिए प्रेरित किया है और समय–समय पर पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ से बकरी पालन की अन्य जानकारी भी लेते हैं।

पृथ्वी सिंह ने डेयरी व्यवसाय को बनाया अपना रोजगार

पशुपालक का नाम	:	श्री पृथ्वी सिंह
पिता का नाम	:	श्री राम कुमार
उम्र	:	35 वर्ष
पता	:	रंगमहल, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)
शिक्षा	:	12वीं पास
मोबाईल नं.	:	6367836457

सूरतगढ़ तहसील के रंगमहल गांव के पृथ्वीसिंह ने कृषि एवं पशुपालन के उचित सामंजस्य से आजीविका प्राप्त कर अपने परिवार का उचित पालन पोषण द्वारा समर्थ जीवन सुनिश्चित कर अपनी सूझ–बूझ का परिचय दिया। घर की आर्थिक स्थिति ज्यादा सही नहीं होने के कारण शिक्षा को बीच में ही छोड़कर पशुपालन को रोजगार के लिए चुना जिसमें शुरूआत के दिनों में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा परन्तु पृथ्वीसिंह ने अपनी 10 बीघा जमीन पर 2 गाय व तीन भैंसों से अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया। जानकारी के अभाव में कई बार आर्थिक हानि का सामना करना पड़ा व फिर भी अपनी मेहनत और लगन से पशुपालन पर ध्यान केंद्रित रखा। इस दौरान पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ पर आयोजित डेयरी फार्मिंग एक उन्नत व्यवसाय प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया जिसमें उन्होंने पशुओं में होने वाले रोग एवं टीकाकरण के बारे में जाना तथा चारा के सही उपयोग व प्रबंधन के बारे में जानकारी मिली। इन तकनीकों का अपने डेयरी फार्म पर उपयोग करके पशुओं में निरंतर बढोतरी होने लगी। आज उनके पास लगभग छोटे व बड़े 30 पशु हैं एवं 1.5 क्विंटल दूध प्रतिदिन उत्पादन हो जाता है व लगभग 35 रूपये प्रतिलीटर दूध का विक्रय कर रहे हैं। पृथ्वीसिंह ने अपनी फार्म पर एक छोटी यूनिट अजोला उत्पादन कि भी लगा रखी है। पृथ्वीसिंह बताते हैं कि अगर वैज्ञानिक तौर तरीके से पशुपालन किया जाए तो पशुपालन में लाभ होना सुनिश्चित है। वे प्रतिमाह दूध विक्रय कर 50 हजार रूपये आय प्राप्त कर लेते हैं। प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवाओं का उपयोग, टीकाकरण, संतुलित आहार, वैज्ञानिक प्रबंधन आदि को जानकर पशुपालन में अच्छा लाभ पृथ्वीसिंह ने एक सफल पशुपालक के रूप में अपनी पहचान बनाई है।